परमात्म प्यार का है मौसम आया***

सावन की घटा बन मन पर है छाया***
बरस रही निरंतर अमृत रस की धारा***
बूंद बूंद जिसकी मन को पुलकित करती***
प्रेम की प्यासी आत्मा की करती तृप्ति***

दुखो की काली घटा को मिली विदाई***
रिम झिम रिम झिम वरदानी फुहार बरसी***
मुरली की मधुर तान पर मन मोर नाचने लगा***
बांसुरी ज्ञान की मन को लुभाने लगी***

छत्रछाया प्रभु की बेफिक्र करने लगी***
बुद्धि के विमान में चढ़ वतन के सैर ***
तीनों लोकों की मुझे मुग्ध करने लगी***
रूहानी नशे से सूद बुद को खोने लगी***

सावन के इस संगमी मौसम में***
खुशियों की हरियाली छाने लगी***
कष्टों की धूप मिट शीतलता की छाया***
सर्व सुखों की अनुभूति सी कराने लगी***

उमंग उत्साह की घटा घनघोर हुई***
एक पल में जन्मों की तड़प को बुझा***

विरह को रूहानी मिलन में बदलने लगी***
अती इंद्रिय सुखों का आभास कराने लगी***

प्यार रूह को महकाने लगा***
ज्ञान योग की रस्सी बन***
दिल्तख्त पर प्रीतम राम के झुलाने लगा***
ऊँची उड़ान फरिश्ते के जैसे होने लगी***

मोहब्बत माशूक की आशिक की लगन ***
सदा साथ और साथी बनने की कसमें***
जन्म जमान्तर संग जीने और मरने की***
सिर्फ तुम्हारी बन कर रहूंगी की खाने लगी***

ओम शांति...रूहानी प्रीतम***